BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट-वन
परिचायिका

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

ज्योतिरीश्वर (lecture)

सरबत धरि उपलब्ध मैथिलीक सबसँ गद्य-ग्रन्थ थिक 'वर्णरत्नाकर' जकर रचयिता छथिन्ह ज्योतिरीश्वर ठाकुर। ज्योतिरीश्वरके नामक संग 'कविशेखराचार्य' उपाधि लगैत अछि। अतः एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ई महान कवि सेहो छलाह। कविताक हिनक कोनो स्वतंत्र ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि। जे तीन टा ग्रन्थ अछि प्राप्त से थिक -(i) वर्णरत्नाकर (ii) धूर्तसमागम (iii) पंचशायक।

हिनक समयक प्रसंग विद्वानलोकनिमे मतभेद अछि। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, पं० बबुआजी मिश्र, प्रो० रमानाथ झा तथा डॉ० जयकान्त मिश्रक मत एक दोसरसँ भिन्न अछि। प्राचीन कविलोकनिक आत्मप्रचारसँ दूर रहैत छलाह। तेँ अपन प्रसंग विशेष किछु कहब आवश्यक नहि बुझैत छलाह। अतः आब हुनकालोकनिक समय-निर्धारण बड़ कठिन होइछ। ओहिमे किछु गोटे ग्रन्थक आदि वा अन्तमे अपन प्रसंग किछु तकरु छोड़ि गेल छथि। ज्योतिरीश्वर सेहो संस्कृत धूर्तसमागमक प्रस्तावना-वाक्य लिखने छथि।

ई पाली गामक मूल निवासी छलाह। हिनक पिताक नाम धीरेश्वर तथा पितामहक नामक रामेश्वर

छलाह ई कर्णाटवंशक अंतिम राजा हरिसिंहदेवक कालमे भेल छलाह। वर्णरत्नाकरक मैथिली अकादमी संस्करणक भूमिकाक अनुसार ज्योतिरीश्वर जहिया धूर्तसमागम लिखलन्हि तहिया हरिसिंहदेव वर्तमान तँ रहथि, किन्तु राज्यच्युत भऽ चुकल छलाह।

वर्णरत्नाकर :- अद्यावधि वर्णरत्नाकरक दू गोट प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित भेल अछि। पहिल 1940 ई० मे रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल द्वारा डॉ सुनीति कुमार चटर्जी आ पं० बबुआजी मिश्रक संयुक्त संपादनमे तथा दोसर 1980 ई० मे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रो० आनन्द मिश्र आ पं० गोविन्द झाक संयुक्त संपादनमे।

जेना नामेसँ स्पष्ट अछि, एहि ग्रन्थमे अनेक वस्तुक वर्णन उपलब्ध अछि। प्रायः तेँ कतहु-कतहु एकरा वर्णन रत्नाकर सेहो कहल गेल अछि। एहि ग्रन्थक अनुसंधान म०म० हरप्रसाद शास्त्रीक 1893 सँ 1900 ई०क अन्तराल दू बेर नेपाल यात्राक क्रममे हुनक शिष्य पं० बालचन्द्र काव्यतीर्थ एवं विनोद बिहारी काव्यतीर्थ मिथिलामे कयलनि। एकर प्रायः दू गोट पाण्डुलिपि छैक। उपलब्ध अछि मात्र एक गोट पाण्डुलिपि, जे बंगाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटीमे सुरक्षित अछि। ज्योतिरीश्वरक लिखल छैक एकर किछु अंश दोबारह छैक, किछु अस्पष्ट आ खण्डित, किछु किछु अंश स्पष्ट। अद्यावधि मुद्रित ग्रन्थ एही पाण्डुलिपिक आधार पर अछि।

क्रमशः...

Sanjit Kumar
04/09/17